Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-3* *Issue-5* *May 2026***

www.researchvidyapith.com **ISSN (Online): 3048-7331**

तेजी से बदलती वैश्विक एवं भारतीय शैक्षिक परिदृश्य में स्थिरता के लिए आजीवन सीखनाः कानपुर जनपद की महिला शिक्षिकाओं के संदर्भ में जागरूकता, व्यवहार, चुनौतियाँ एवं प्रभाव का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. सीमा द्विवेदी

असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग, अकबरपुर डिग्री कॉलेज, अकबरपुर, कानपुर देहात

Article Info: *(Recieved- 30/02/2026, Accept- 20/03/2026, Published- 10/05/2026)*

DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i5004

सार

वर्तमान अध्ययन "तेजी से बदलती दुनिया में स्थिरता के लिए आजीवन सीखना" विषय पर आधारित है, जिसमें कानपुर जनपद की महिला शिक्षिकाओं के संदर्भ में आजीवन अधिगम के विभिन्न आयामों का विश्लेषण किया गया है। आधुनिक युग में तकनीकी, सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों की तीव्रता ने शिक्षा के स्वरूप को व्यापक रूप से प्रभावित किया है, जिसके परिणामस्वरूप निरंतर सीखना एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य महिला शिक्षिकाओं में आजीवन सीखने की जागरूकता, व्यवहारिक प्रवृत्तियों, डिजिटल माध्यमों के उपयोग, सीखने में आने वाली बाधाओं तथा स्थिरता पर इसके प्रभाव का मूल्यांकन करना है। अध्ययन के लिए वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति अपनाई गई, जिसमें प्राथमिक डेटा के संकलन हेतु 25 महिला शिक्षिकाओं पर आधारित एक संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत एवं आवृत्ति के माध्यम से किया गया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश शिक्षिकाएँ आजीवन सीखने की अवधारणा से परिचित हैं तथा वे इसे अपने पेशेवर एवं व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक मानती हैं। डिजिटल माध्यमों का उपयोग बढ़ रहा है, किन्तु तकनीकी संसाधनों की कमी एवं डिजिटल विभाजन अभी भी एक चुनौती बना हुआ है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि समय की कमी और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ महिला शिक्षिकाओं के लिए प्रमुख बाधाएँ हैं। इसके बावजूद, अधिकांश शिक्षिकाएँ भविष्य में भी निरंतर सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखती हैं। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आजीवन सीखना न केवल व्यक्तिगत विकास का माध्यम है, बल्कि यह शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता, सामाजिक समावेशन तथा आर्थिक स्थिरता को भी सुदृढ़ करता है। उचित नीतिगत हस्तक्षेप एवं संसाधनों की उपलब्धता से इसे और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

मुख्य शब्द– आजीवन सीखना, महिला शिक्षिकाएँ, स्थिरता, शिक्षा, कौशल विकास, डिजिटल शिक्षा, नई शिक्षा नीति 2020, जागरूकता, पेशेवर विकास, सामाजिक समावेशन, आर्थिक स्थिरता

प्रस्तावना

आज का युग तीव्र परिवर्तन का युग है। विज्ञान, तकनीक, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, सामाजिक संरचनाकृहर क्षेत्र में बदलाव इतनी तेजी से हो रहा है कि व्यक्ति के लिए स्थिर बने रहना एक चुनौती बन गया है। ऐसे समय में "आजीवन सीखना" (Lifelong Learning) केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता बन चुका है। यह वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति जीवन के हर चरण में ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण को निरंतर विकसित करता रहता है। महात्मा गांधी ने कहा था– "जीओ ऐसे जैसे कि तुम्हें कल मरना है, सीखो ऐसे जैसे कि तुम्हें

हमेशा जीना है।" यह उद्धरण आज के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है। यदि व्यक्ति निरंतर सीखता रहता है, तो वह न केवल बदलती परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढाल सकता है, बल्कि अपने जीवन में स्थिरता और संतुलन भी बनाए रख सकता है। 21वीं सदी को डिजिटल युग कहा जाता है। इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), मशीन लर्निंग, और स्वचालन (Automation) ने जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। नौकरी के पारंपरिक स्वरूप बदल रहे हैं, नई नौकरियाँ पैदा हो रही हैं और पुरानी अप्रासंगिक होती जा रही हैं। अल्विन टॉफलर का प्रसिद्ध कथन है– "21वीं सदी का निरक्षर वह नहीं होगा जो पढ़ नहीं सकता, बल्कि वह होगा जो सीख नहीं सकता, भूल नहीं सकता और पुनः सीख नहीं सकता।" यह कथन स्पष्ट करता है कि बदलती दुनिया में जीवित रहने के लिए सीखने की क्षमता सबसे महत्वपूर्ण है।

आजीवन सीखना एक सतत प्रक्रिया है जो औपचारिक शिक्षा तक सीमित नहीं है। यह व्यक्ति के पूरे जीवन में चलने वाली एक यात्रा है जिसमें अनुभव, अवलोकन, प्रशिक्षण और आत्म–अध्ययन शामिल होते हैं। नेल्सन मंडेला ने कहा थाकृ "शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं।" आजीवन सीखना व्यक्ति को केवल ज्ञान नहीं देता, बल्कि उसे बदलती परिस्थितियों के प्रति लचीला, जागरूक और सक्षम बनाता है। स्थिरता का अर्थ केवल स्थिर रहना नहीं, बल्कि बदलती परिस्थितियों में संतुलन बनाए रखना है। जब व्यक्ति निरंतर सीखता है, तो वह अनिश्चितताओं का सामना अधिक आत्मविश्वास से कर पाता है। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का कथन इस संदर्भ में अत्यंत प्रेरणादायक हैकृ "सीखना रचनात्मकता देता है, रचनात्मकता सोच को जन्म देती है, सोच ज्ञान देती है और ज्ञान आपको महान बनाता है।" इस प्रकार, आजीवन सीखना व्यक्ति को मानसिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से स्थिर बनाता है।

आज के समय में तकनीकी परिवर्तन इतनी तेजी से हो रहे हैं कि यदि व्यक्ति स्वयं को अद्यतन (नचकंजमक) नहीं रखता, तो वह पीछे छूट सकता है। डिजिटल साक्षरता, डेटा विश्लेषण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी नई क्षमताएँ सीखना आवश्यक हो गया है। स्टीव जॉब्स ने कहा थाकृ "जंल ीनदहतल, जंल विवसपी." (हमेशा सीखने के लिए उत्सुक और जिज्ञासु बने रहो।) यह जिज्ञासा ही व्यक्ति को लगातार सीखने के लिए प्रेरित करती है। आजीवन सीखना केवल व्यावसायिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्तिगत विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह व्यक्ति की सोच, दृष्टिकोण और व्यवहार को परिष्कृत करता है। स्वामी विवेकानंद ने कहा थाकृ "सीखना ही जीवन है, और जो सीखना बंद कर देता है, वह जीना बंद कर देता है।" यह कथन दर्शाता है कि सीखना जीवन की निरंतरता का आधार है।

आजीवन सीखना समाज में सामंजस्य और समझ को बढ़ावा देता है। जब व्यक्ति नई–नई चीजें सीखता है, तो वह विभिन्न संस्कृतियों, विचारों और दृष्टिकोणों को स्वीकार करने में सक्षम होता है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा थाकृ "जहाँ मन भय से मुक्त हो और ज्ञान मुक्त हो, वहीं सच्ची शिक्षा का वास होता है।" यह शिक्षा ही समाज में स्थिरता और शांति का आधार बनती है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में केवल डिग्री पर्याप्त नहीं है। निरंतर कौशल विकास (Skill Development) आवश्यक है। नई तकनीकों और कार्य पद्धतियों को सीखना व्यक्ति को रोजगार के अवसरों के लिए तैयार करता है। बिल गेट्स का कथन हैकृ "यदि आप गरीब पैदा होते हैं तो यह आपकी गलती नहीं है, लेकिन यदि आप गरीब ही मरते हैं तो यह आपकी गलती है।" यह कथन संकेत करता है कि सीखने और आत्म–विकास के माध्यम से व्यक्ति अपनी आर्थिक स्थिति को बदल सकता है। आजीवन सीखना मानसिक स्वास्थ्य को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। नई चीजें सीखने से मस्तिष्क सक्रिय रहता है, तनाव कम होता है और आत्म–संतोष की भावना बढ़ती है। अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा थाकृ "बुद्धिमत्ता का असली संकेत ज्ञान नहीं, बल्कि कल्पना है।" सीखने की प्रक्रिया कल्पना को विकसित करती है, जिससे मानसिक संतुलन बना रहता है।

अनुसंधान उद्देश्य

तेजी से बदलती दुनिया में स्थिरता के लिए आजीवन सीखने की भूमिका को समझने हेतु निम्नलिखित प्रमुख अनुसंधान उद्देश्य निर्धारित किए जा सकते हैं–

1. आजीवन सीखने की अवधारणा एवं उसके विभिन्न आयामों (शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी) का विश्लेषण करना।
2. तेजी से बदलते वैश्विक एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य में आजीवन सीखने की आवश्यकता का मूल्यांकन करना।
3. यह अध्ययन करना कि आजीवन सीखना व्यक्ति की मानसिक, व्यावसायिक एवं सामाजिक स्थिरता को किस प्रकार प्रभावित करता है।
4. डिजिटल युग में नई तकनीकों (जैसे ऑनलाइन शिक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता) के माध्यम से सीखने के स्वरूप

में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।

5. आजीवन सीखने के समक्ष उपस्थित प्रमुख चुनौतियों एवं बाधाओं की पहचान करना।
6. आजीवन सीखने को प्रभावी बनाने हेतु रणनीतियों एवं नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।
7. भारतीय शिक्षा प्रणाली, विशेषकर नई शिक्षा नीति 2020, में आजीवन सीखने के प्रावधानों का अध्ययन करना।

अध्ययन का महत्व

यह अध्ययन वर्तमान समय में अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि विश्व तेजी से तकनीकी एवं सामाजिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। इस संदर्भ में इस अध्ययन का महत्व निम्नलिखित बिंदुओं में स्पष्ट किया जा सकता है–

1. यह अध्ययन व्यक्तियों को यह समझने में सहायता करता है कि निरंतर सीखना उनके आत्म–विकास, आत्मविश्वास और मानसिक संतुलन के लिए कितना आवश्यक है।
2. यह अध्ययन शिक्षा प्रणाली को पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों से आगे बढ़कर कौशल–आधारित और लचीले अधिगम मॉडल अपनाने के लिए प्रेरित करता है।
3. आजीवन सीखना रोजगार क्षमता को बढ़ाता है। यह अध्ययन कौशल विकास और आर्थिक स्थिरता के बीच संबंध को स्पष्ट करता है।
4. यह अध्ययन सामाजिक समावेशन, सांस्कृतिक समझ और सक्रिय नागरिकता को बढ़ावा देने में आजीवन सीखने की भूमिका को उजागर करता है।
5. यह अध्ययन नीति–निर्माताओं को ऐसी नीतियाँ विकसित करने में सहायता कर सकता है, जो शिक्षा को अधिक समावेशी, लचीला और भविष्य–उन्मुख बनाएँ।
6. यह अध्ययन सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने में आजीवन सीखने की भूमिका को रेखांकित करता है।

प्रश्नावली निर्माण (कानपुर जनपद की महिला शिक्षिकाओं के संदर्भ में)

वर्तमान अध्ययन "तेजी से बदलती दुनिया में स्थिरता के लिए आजीवन सीखना" विषय पर आधारित है, जिसके अंतर्गत महिला शिक्षिकाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी गई है। कानपुर जनपद, जो एक प्रमुख शहरी एवं अर्ध–शहरी शैक्षिक केंद्र है, यहाँ की महिला शिक्षिकाएँ न केवल शिक्षण कार्य में सक्रिय हैं, बल्कि सामाजिक एवं पारिवारिक जिम्मेदारियों का भी सफलतापूर्वक निर्वहन करती हैं। ऐसे परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक हो जाता है कि उनके सीखने के दृष्टिकोण, व्यवहार एवं चुनौतियों को समझा जाए। इसी उद्देश्य से एक सुव्यवस्थित एवं संरचित प्रश्नावली का निर्माण किया गया। प्रश्नावली निर्माण की प्रक्रिया में शोध के उद्देश्यों को केंद्र में रखा गया तथा ऐसे प्रश्नों का चयन किया गया जो आजीवन सीखने की अवधारणा, उसके प्रति जागरूकता, व्यवहारिक उपयोग, डिजिटल माध्यमों की भूमिका, तथा सामने आने वाली बाधाओं को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त कर सकें। प्रश्नावली में कुल 20 प्रश्न शामिल किए गए, जो सरल, स्पष्ट एवं समझने में सहज हैं, ताकि सभी प्रतिभागी बिना किसी भ्रम के उत्तर दे सकें। विशेष ध्यान इस बात पर दिया गया कि प्रश्न कानपुर जनपद की महिला शिक्षिकाओं की सामाजिक एवं व्यावसायिक परिस्थितियों के अनुरूप हों। उदाहरण के लिए, समय की कमी, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, तथा तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता जैसे पहलुओं को विशेष रूप से शामिल किया गया। इसके अतिरिक्त, प्रश्नावली को इस प्रकार डिजाइन किया गया कि यह मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार के डेटा एकत्रित कर सके। अधिकांश प्रश्न बहुविकल्पीय हैं, जिससे उत्तरों का विश्लेषण सरल और व्यवस्थित हो सके। अतः यह प्रश्नावली न केवल डेटा संग्रह का एक माध्यम है, बल्कि यह महिला शिक्षिकाओं के अनुभवों, दृष्टिकोणों और आवश्यकताओं को समझने का एक प्रभावी उपकरण भी है, जो इस अध्ययन को अधिक विश्वसनीय एवं प्रासंगिक बनाता है।

कृपया निम्न प्रश्नों के उत्तर उपयुक्त विकल्प पर लगाकर दें–

1. क्या आप "आजीवन सीखना" की अवधारणा से परिचित हैं?
2. क्या आप नियमित रूप से नए ज्ञान/कौशल सीखने का प्रयास करती हैं?
3. क्या डिजिटल माध्यम (ऑनलाइन कोर्स, वेबिनार) आपके सीखने में सहायक हैं?
4. क्या आप अपने विषय से बाहर भी नई चीजें सीखती हैं?

5. क्या आपको लगता है कि सीखना आपकी नौकरी में स्थिरता लाता है?
6. क्या नई शिक्षा नीति 2020 आजीवन सीखने को बढ़ावा देती है?
7. क्या आपको तकनीकी कौशल सीखने में कठिनाई होती है?
8. क्या विद्यालय स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम पर्याप्त हैं?
9. क्या समय की कमी सीखने में बाधा है?
10. क्या पारिवारिक जिम्मेदारियाँ सीखने को प्रभावित करती हैं?
11. क्या आप स्वयं–प्रेरित शिक्षार्थी हैं?
12. क्या सीखने से आपका आत्मविश्वास बढ़ता है?
13. क्या आजीवन सीखना मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है?
14. क्या आप सहकर्मियों से सीखने को महत्व देती हैं?
15. क्या ग्रामीण–शहरी अंतर सीखने के अवसरों को प्रभावित करता है?
16. क्या ऑनलाइन शिक्षा पारंपरिक शिक्षा से अधिक प्रभावी है?
17. क्या आप नियमित रूप से प्रशिक्षण/वर्कशॉप में भाग लेती हैं?
18. क्या सरकार द्वारा पर्याप्त सीखने के अवसर उपलब्ध हैं?
19. क्या आजीवन सीखना आर्थिक स्थिरता में मदद करता है?
20. क्या आप भविष्य में भी निरंतर सीखना जारी रखेंगी?

सांख्यिकीय विश्लेषण

इस अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से किया गया है, जिससे निष्कर्षों को अधिक सटीक, व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक रूप से प्रस्तुत किया जा सके। सांख्यिकीय विश्लेषण किसी भी शोध का महत्वपूर्ण भाग होता है, क्योंकि यह कच्चे आंकड़ों को अर्थपूर्ण जानकारी में परिवर्तित करता है। प्रस्तुत अध्ययन में 25 महिला शिक्षिकाओं से प्राप्त उत्तरों को संकलित कर उन्हें सारणियों के रूप में व्यवस्थित किया गया। इसके पश्चात प्रत्येक उत्तर को संख्या एवं प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया गया, जिससे विभिन्न प्रवृत्तियों एवं पैटर्न को स्पष्ट रूप से समझा जा सके। विश्लेषण की प्रक्रिया में वर्णनात्मक सांख्यिकी का उपयोग किया गया है, जिसमें मुख्य रूप से प्रतिशत विश्लेषण अपनाया गया। यह विधि छोटे नमूने के लिए उपयुक्त होती है और इससे डेटा की स्पष्ट व्याख्या संभव होती है। सारणियों के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया, जिससे विभिन्न पहलुओंकृजैसे जागरूकता, व्यवहार, बाधाएँ, एवं प्रभावकृका गहन विश्लेषण किया जा सके। प्रत्येक सारणी के साथ विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की गई है, जिससे आंकड़ों के पीछे छिपे वास्तविक अर्थ को समझना आसान हो जाता है। इसके अतिरिक्त, विश्लेषण में यह भी ध्यान रखा गया कि निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ हों और किसी प्रकार के पूर्वाग्रह से प्रभावित न हों। इस प्रकार, सांख्यिकीय विश्लेषण इस अध्ययन को वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है तथा निष्कर्षों की विश्वसनीयता और प्रामाणिकता को सुनिश्चित करता है, जिससे यह शोध शिक्षा एवं नीति निर्माण के क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

सारणी 1: महिला शिक्षकों में आजीवन सीखने की अवधारणा के प्रति जागरूकता का स्तर (कानपुर जनपद के संदर्भ में)

विकल्प	संख्या	प्रतिशत
हाँ	20	80%
नहीं	5	20%

सारणी 1 के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि कानपुर जनपद की महिला शिक्षकों में आजीवन सीखने की अवधारणा के प्रति जागरूकता का स्तर अपेक्षाकृत उच्च है। कुल 25 प्रतिभागियों में से 20 शिक्षिकाएँ (80 प्रतिशत) इस अवधारणा से परिचित पाई गईं, जबकि 5 शिक्षिकाएँ (20 प्रतिशत) इससे अनभिज्ञ रहीं। यह परिणाम दर्शाता है कि वर्तमान शैक्षिक परिवेश में शिक्षकों तक आजीवन अधिगम का विचार पर्याप्त रूप से पहुँचा है, जो सकारात्मक संकेत है। जागरूकता का यह उच्च स्तर इस तथ्य की ओर भी संकेत करता है कि शिक्षिकाएँ अपने पेशेवर विकास के प्रति सजग हैं तथा वे बदलते शैक्षिक परिदृश्य के साथ स्वयं को अद्यतन रखने का प्रयास कर

रही हैं। विशेष रूप से नई शिक्षा नीति 2020 तथा विभिन्न ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने इस जागरूकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालाँकि, 20 प्रतिशत शिक्षिकाओं का इस अवधारणा से अनभिज्ञ होना एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। यह संभवतः सूचना के अभाव, प्रशिक्षण की कमी या तकनीकी संसाधनों की सीमित उपलब्धता के कारण हो सकता है। ग्रामीण या अर्ध–शहरी क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षिकाओं के लिए यह समस्या अधिक गंभीर हो सकती है। अतः यह आवश्यक है कि शैक्षिक संस्थान एवं नीति–निर्माता इस दिशा में विशेष प्रयास करें, जैसे नियमित कार्यशालाएँ, सेमिनार तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना। इसके अतिरिक्त, डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से भी जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है, जिससे सभी शिक्षिकाएँ समान रूप से लाभान्वित हो सकें। इस प्रकार, जागरूकता में वृद्धि से न केवल शिक्षकों का व्यक्तिगत विकास संभव होगा, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता में भी सुधार आएगा।

सारणी 2: महिला शिक्षकों में आजीवन सीखने के प्रति रुचि एवं व्यवहारिक संलग्नता का स्तर

विकल्प	संख्या	प्रतिशत
नियमित	18	72%
कभी-कभी	5	20%
नहीं	2	8%

सारणी 2 के आंकड़े महिला शिक्षकों के सीखने के व्यवहार और उनकी सक्रिय भागीदारी को दर्शाते हैं। कुल 25 शिक्षिकाओं में से 18 (72 प्रतिशत) नियमित रूप से सीखने में संलग्न पाई गईं, जबकि 5 (20 प्रतिशत) शिक्षिकाएँ कभी–कभी सीखती हैं और 2 (8 प्रतिशत) शिक्षिकाएँ सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय नहीं हैं। यह परिणाम इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि अधिकांश शिक्षिकाएँ अपने पेशेवर विकास के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। नियमित रूप से सीखने वाली शिक्षिकाएँ अपने शिक्षण कौशल को बेहतर बनाने, नवीन शिक्षण विधियों को अपनाने तथा छात्रों की आवश्यकताओं के अनुसार स्वयं को अनुकूलित करने में सक्षम होती हैं। यह प्रवृत्ति शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने में सहायक होती है। इसके विपरीत, जो शिक्षिकाएँ केवल कभी–कभी सीखती हैं या बिल्कुल नहीं सीखतीं, वे बदलते शैक्षिक वातावरण के साथ तालमेल बैठाने में कठिनाई महसूस कर सकती हैं। इस अंतर के पीछे कई कारण हो सकते हैं, जैसे समय की कमी, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, या प्रेरणा का अभाव। विशेष रूप से महिला शिक्षकों के लिए कार्य और परिवार के बीच संतुलन बनाना एक चुनौती हो सकता है, जो उनके सीखने के समय को प्रभावित करता है। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षकों के लिए लचीले सीखने के अवसर उपलब्ध कराए जाएँ, जैसे ऑनलाइन कोर्स, स्वयं–गति प्रशिक्षण आदि। साथ ही, संस्थागत स्तर पर प्रेरणा और समर्थन प्रदान करना भी महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, सीखने के प्रति सकारात्मक व्यवहार को बढ़ावा देकर शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

सारणी 3: महिला शिक्षकों द्वारा डिजिटल माध्यमों के उपयोग का स्तर और उसकी प्रभावशीलता

विकल्प	संख्या	प्रतिशत
उपयोग करती हैं	15	60%
उपयोग नहीं करती	10	40%

सारणी 3 से यह स्पष्ट होता है कि 25 महिला शिक्षकों में से 15 (60 प्रतिशत) शिक्षिकाएँ डिजिटल माध्यमों का उपयोग सीखने के लिए करती हैं, जबकि 10 (40 प्रतिशत) शिक्षिकाएँ इनका उपयोग नहीं करतीं। यह आंकड़ा दर्शाता है कि डिजिटल शिक्षा का प्रभाव बढ़ रहा है, लेकिन अभी भी एक बड़ा वर्ग इससे पूर्णतः जुड़ नहीं पाया है। डिजिटल माध्यमों का उपयोग करने वाली शिक्षिकाएँ ऑनलाइन पाठ्यक्रम, वेबिनार, शैक्षिक वीडियो और अन्य संसाधनों का लाभ उठाकर अपने ज्ञान और कौशल को अद्यतन कर रही हैं। यह उन्हें अधिक लचीले और प्रभावी तरीके से सीखने का अवसर प्रदान करता है। इसके अलावा, डिजिटल प्लेटफॉर्म शिक्षकों को वैश्विक स्तर पर ज्ञान प्राप्त करने का अवसर भी देते हैं। दूसरी ओर, 40 प्रतिशत शिक्षिकाओं द्वारा डिजिटल माध्यमों का उपयोग न करना एक महत्वपूर्ण समस्या की ओर संकेत करता है। इसके पीछे तकनीकी ज्ञान की कमी, इंटरनेट की सीमित उपलब्धता, या डिजिटल उपकरणों की अनुपलब्धता जैसे कारण हो सकते हैं। यह डिजिटल विभाजन शिक्षकों के बीच असमानता को बढ़ाता है और उनके पेशेवर विकास में बाधा उत्पन्न करता है। इस स्थिति को सुधारने के लिए आवश्यक है कि शिक्षकों को डिजिटल साक्षरता का प्रशिक्षण दिया जाए और उन्हें आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ। इसके अतिरिक्त, सरकार और शैक्षिक संस्थानों को ऐसे कार्यक्रम विकसित करने चाहिए, जो सभी शिक्षकों को डिजिटल शिक्षा से जोड़ सकें। इस प्रकार, डिजिटल माध्यमों का

व्यापक उपयोग आजीवन सीखने को अधिक प्रभावी और सुलभ बना सकता है।

सारणी 4: महिला शिक्षकों के लिए आजीवन सीखने में प्रमुख बाधाएँ और उनकी प्रकृति

बाधा	संख्या	प्रतिशत
समय की कमी	10	40%
पारिवारिक जिम्मेदारी	8	32%
संसाधनों की कमी	5	20%
अन्य	2	8%

सारणी 4 महिला शिक्षकों के सामने आने वाली प्रमुख बाधाओं को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। कुल 25 शिक्षिकाओं में से 10 (40 प्रतिशत) ने समय की कमी को सबसे बड़ी बाधा बताया, जबकि 8 (32 प्रतिशत) शिक्षिकाओं ने पारिवारिक जिम्मेदारियों को प्रमुख कारण माना। इसके अतिरिक्त, 5 (20 प्रतिशत) शिक्षिकाओं ने संसाधनों की कमी और 2 (8 प्रतिशत) ने अन्य कारणों को जिम्मेदार बताया। समय की कमी एक सामान्य समस्या है, विशेष रूप से उन शिक्षिकाओं के लिए जो विद्यालयी कार्यों के साथ–साथ घरेलू जिम्मेदारियों का भी निर्वहन करती हैं। यह स्थिति उन्हें सीखने के लिए पर्याप्त समय नहीं दे पाती। पारिवारिक जिम्मेदारियाँ भी एक महत्वपूर्ण कारक हैं, जो महिला शिक्षकों के लिए विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण होती हैं। संसाधनों की कमी, जैसे इंटरनेट की अनुपलब्धता या डिजिटल उपकरणों का अभाव, भी सीखने में बाधा उत्पन्न करती है। यह समस्या विशेष रूप से ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में अधिक देखने को मिलती है। इन बाधाओं को दूर करने के लिए आवश्यक है कि शिक्षकों के लिए लचीले और सुलभ सीखने के अवसर प्रदान किए जाएँ। साथ ही, संस्थागत स्तर पर समर्थन और प्रोत्साहन भी आवश्यक है। यदि इन समस्याओं का समाधान किया जाए, तो महिला शिक्षकों के लिए आजीवन सीखना अधिक प्रभावी और सुलभ हो सकता है।

सारणी 5: आजीवन सीखने का महिला शिक्षकों की पेशेवर एवं मानसिक स्थिरता पर प्रभाव

प्रभाव	संख्या	प्रतिशत
सकारात्मक	19	76%
सामान्य	4	16%
नकारात्मक	2	8%

सारणी 5 के आंकड़े यह दर्शाते हैं कि अधिकांश महिला शिक्षिकाएँ आजीवन सीखने को अपनी पेशेवर और मानसिक स्थिरता के लिए सकारात्मक मानती हैं। कुल 25 शिक्षिकाओं में से 19 (76 प्रतिशत) ने इसे सकारात्मक प्रभावकारी बताया, जबकि 4 (16 प्रतिशत) ने इसे सामान्य और 2 (8 प्रतिशत) ने नकारात्मक माना। यह परिणाम स्पष्ट करता है कि निरंतर सीखना शिक्षकों के आत्मविश्वास, कौशल और कार्य दक्षता को बढ़ाता है। इससे वे अपने कार्य में अधिक संतुष्टि और स्थिरता महसूस करती हैं। मानसिक रूप से भी यह उन्हें सक्रिय और प्रेरित बनाए रखता है। हालांकि, कुछ शिक्षिकाओं ने इसे सामान्य या नकारात्मक बताया, जो यह संकेत करता है कि सीखने की प्रक्रिया कभी–कभी अतिरिक्त दबाव या तनाव का कारण बन सकती है। यह विशेष रूप से तब होता है जब शिक्षकों पर पहले से ही कार्यभार अधिक होता है। इसलिए यह आवश्यक है कि सीखने की प्रक्रिया को अधिक लचीला और अनुकूल बनाया जाए, ताकि यह शिक्षकों के लिए बोझ न बने। इस प्रकार, आजीवन सीखना शिक्षकों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सारणी 6: महिला शिक्षकों की भविष्य में आजीवन सीखने के प्रति अभिरुचि और प्रतिबद्धता

विकल्प	संख्या	प्रतिशत
हाँ	22	88%
नहीं	3	12%

सारणी 6 के अनुसार, 25 महिला शिक्षिकाओं में से 22 (88 प्रतिशत) ने भविष्य में भी आजीवन सीखने को जारी रखने की इच्छा व्यक्त की, जबकि 3 (12 प्रतिशत) शिक्षिकाओं ने इसमें रुचि नहीं दिखाई। यह परिणाम अत्यंत सकारात्मक है और यह दर्शाता है कि अधिकांश शिक्षिकाएँ सीखने के महत्व को समझती हैं और इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहती हैं। यह प्रवृत्ति शिक्षा प्रणाली के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करती है, क्योंकि प्रेरित और सीखने के इच्छुक शिक्षक ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर सकते हैं। यह भी स्पष्ट होता है कि आजीवन सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण शिक्षकों के पेशेवर विकास और आत्म–संतुष्टि को बढ़ाता

है।हालांकि, 12 प्रतिशत शिक्षिकाओं की अनिच्छा यह संकेत देती है कि कुछ शिक्षकों को अभी भी प्रेरणा या समर्थन की आवश्यकता है। इसके पीछे कारण हो सकते हैं जैसे थकान, समय की कमी या संसाधनों की अनुपलब्धता। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षकों को प्रोत्साहित करने के लिए उपयुक्त नीतियाँ और कार्यक्रम बनाए जाएँ। यदि सभी शिक्षकों को समान अवसर और समर्थन प्रदान किया जाए, तो आजीवन सीखने की संस्कृति को और अधिक सुदृढ़ किया जा सकता है।

परिणाम एवं चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों का विश्लेषण विभिन्न अनुसंधान उद्देश्यों के संदर्भ में किया गया है, जिससे आजीवन सीखने की भूमिका, उसकी आवश्यकता तथा उससे संबंधित चुनौतियों को स्पष्ट रूप से समझा जा सके। सबसे पहले, अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश महिला शिक्षिकाएँ आजीवन सीखने की अवधारणा से परिचित हैं। 80 प्रतिशत शिक्षिकाओं ने इस अवधारणा के प्रति जागरूकता व्यक्त की, जो यह दर्शाता है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इस विचार का पर्याप्त प्रसार हो चुका है। यह निष्कर्ष अनुसंधान के पहले उद्देश्य को पूरा करता है, जिसमें आजीवन सीखने की अवधारणा को समझना शामिल था। दूसरे उद्देश्य के अंतर्गत, तेजी से बदलती दुनिया में आजीवन सीखने की आवश्यकता का मूल्यांकन किया गया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि 72 प्रतिशत शिक्षिकाएँ नियमित रूप से सीखने में संलग्न हैं, जो यह दर्शाता है कि वे बदलते शैक्षिक एवं तकनीकी परिवेश के अनुरूप स्वयं को अद्यतन रखने का प्रयास कर रही हैं। यह प्रवृत्ति इस तथ्य को पुष्ट करती है कि आजीवन सीखना वर्तमान समय में एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। तीसरे उद्देश्य के अनुसार, आजीवन सीखने का प्रभाव शिक्षिकाओं की स्थिरता पर भी देखा गया। 76 प्रतिशत शिक्षिकाओं ने यह स्वीकार किया कि निरंतर सीखना उनके आत्मविश्वास, कार्य दक्षता और मानसिक संतुलन को बढ़ाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आजीवन सीखना न केवल पेशेवर विकास में सहायक है, बल्कि यह मानसिक एवं सामाजिक स्थिरता को भी सुदृढ़ करता है। चौथे उद्देश्य के अंतर्गत डिजिटल माध्यमों की भूमिका का विश्लेषण किया गया। अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि 60 प्रतिशत शिक्षिकाएँ डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग सीखने के लिए करती हैं, जबकि 40 प्रतिशत अभी भी इससे वंचित हैं। यह डिजिटल विभाजन की समस्या को दर्शाता है, जो आजीवन सीखने के प्रभावी क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न करता है। पाँचवें उद्देश्य के अनुसार, सीखने में आने वाली बाधाओं की पहचान की गई। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि समय की कमी (40 प्रतिशत) और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ (32 प्रतिशत) प्रमुख बाधाएँ हैं। इसके अतिरिक्त, संसाधनों की कमी (20 प्रतिशत) भी एक महत्वपूर्ण समस्या है। यह विशेष रूप से महिला शिक्षिकाओं के संदर्भ में महत्वपूर्ण है, जहाँ कार्य और परिवार के बीच संतुलन बनाना एक चुनौती होती है। छठे उद्देश्य के तहत, आजीवन सीखने को प्रभावी बनाने के लिए रणनीतियों की आवश्यकता पर विचार किया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि यदि शिक्षकों को लचीले सीखने के अवसर, डिजिटल संसाधन और संस्थागत समर्थन प्रदान किया जाए, तो वे अधिक प्रभावी रूप से सीखने की प्रक्रिया में भाग ले सकती हैं। सातवें उद्देश्य के अनुसार, शिक्षा नीति की भूमिका का विश्लेषण किया गया। यद्यपि अधिकांश शिक्षिकाएँ नई शिक्षा नीति 2020 के बारे में जागरूक हैं, फिर भी इसके व्यावहारिक क्रियान्वयन में कुछ सीमाएँ पाई गईं। इससे यह संकेत मिलता है कि नीति और उसके कार्यान्वयन के बीच अंतर को कम करने की आवश्यकता है। समग्र रूप से, अध्ययन के परिणाम यह दर्शाते हैं कि कानपुर जनपद की महिला शिक्षिकाओं में आजीवन सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है और वे इसे अपने पेशेवर एवं व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण मानती हैं। हालांकि, कुछ संरचनात्मक और सामाजिक बाधाएँ अभी भी इस प्रक्रिया को प्रभावित कर रही हैं। अतः यह आवश्यक है कि नीति–निर्माता, शैक्षिक संस्थान और समाज मिलकर ऐसे वातावरण का निर्माण करें, जो आजीवन सीखने को प्रोत्साहित करे और इसे सभी के लिए सुलभ बनाए। इस प्रकार, आजीवन सीखना न केवल व्यक्तिगत विकास का माध्यम बन सकता है, बल्कि यह समाज और राष्ट्र की स्थिरता और प्रगति में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि तेजी से बदलती दुनिया में आजीवन सीखना एक अत्यंत आवश्यक और प्रासंगिक अवधारणा बन चुकी है। कानपुर जनपद की महिला शिक्षिकाओं के संदर्भ में किए गए इस अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अधिकांश शिक्षिकाएँ सीखने के महत्व को समझती हैं और इसे अपने जीवन एवं पेशे का अभिन्न हिस्सा मानती हैं। अध्ययन में यह पाया गया कि आजीवन सीखना शिक्षिकाओं के आत्मविश्वास, कौशल विकास, तथा कार्य दक्षता को बढ़ाता है, जिससे उनकी पेशेवर स्थिरता में सुधार होता है। साथ ही, यह मानसिक संतुलन एवं आत्म–संतोष को भी बढ़ावा देता है। डिजिटल माध्यमों की बढ़ती भूमिका ने सीखने के नए अवसर प्रदान किए हैं, हालांकि तकनीकी असमानता और संसाधनों की कमी अभी भी प्रमुख

बाधाएँ हैं। महिला शिक्षिकाओं के संदर्भ में पारिवारिक जिम्मेदारियाँ और समय का अभाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं, जो उनके सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। इसके बावजूद, अधिकांश शिक्षिकाओं में भविष्य में भी सीखते रहने की प्रबल इच्छा पाई गई, जो एक सकारात्मक संकेत है। अतः यह आवश्यक है कि सरकार, शैक्षिक संस्थान और समाज मिलकर ऐसे अनुकूल वातावरण का निर्माण करें, जो आजीवन सीखने को प्रोत्साहित करे। डिजिटल साक्षरता, लचीले शिक्षण अवसर, और संस्थागत समर्थन इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इस प्रकार, आजीवन सीखना न केवल व्यक्तिगत विकास का साधन है, बल्कि यह शिक्षा की गुणवत्ता, सामाजिक समावेशन और राष्ट्रीय प्रगति के लिए भी एक महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ सूची

1. कालेहसारी, एम. क्यू., खगानिजादेह, एम., एवं एबादी, ए. (2017). नर्सिंग शिक्षा में आजीवन सीखने की रणनीतियाँ, एक व्यवस्थित समीक्षा। जर्नल ऑफ नर्सिंग एजुकेशन रिसर्च, 12(3), 145–156।
2. थ्वे, डब्ल्यू. पी. (2023). शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में आजीवन सीखना एक व्यवस्थित साहित्य समीक्षा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 58(2), 210–225।
3. कॉलिन्स, जे. (2009). 21वीं सदी में आजीवन सीखना और उससे आगे। रेडियोलॉजी एजुकेशन जर्नल, 29(2), 345–352।
4. वर्गास, सी. (2017). सामाजिक न्याय के दृष्टिकोण से आजीवन सीखना। यूनेस्को पब्लिकेशन, पेरिस।
5. यूनेस्को. (2016). वयस्क शिक्षा और आजीवन सीखने पर वैश्विक रिपोर्ट। पेरिस यूनेस्को।
6. सेडेफॉप. (2023). यूरोप में आजीवन सीखने के रुझान 2000–2020। लक्ज़मबर्ग यूरोपीय संघ प्रकाशन।
7. एडवर्ड्स, आर. (2010). आजीवन सीखने का अंतरू एक उत्तर–मानव स्थिति। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लाइफलॉन्ग एजुकेशन, 29(1), 1–15।
8. यांग, एम. (2008). ऑनलाइन दूरी शिक्षा के माध्यम से आजीवन सीखने का पुनर्विचार। डिस्टेंस एजुकेशन जर्नल, 29(3), 345–358।
9. लिंग, सी. एक्स., एवं बोहन, टी. (2019). आजीवन सीखने के लिए एक वैचारिक ढाँचा। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जर्नल, 45(1), 112–130।
10. पारिसी, जी. आई., केम्पर, जे., पार्ट, जे. एल., कपुटो, बी., एवं वोगेलस्टीन, जे. टी. (2018). न्यूरल नेटवर्क में सतत आजीवन सीखनारू एक समीक्षा। न्यूरल नेटवर्क्स, 113, 54–71।
11. मेंडेज़, जे. ए., एवं ईटन, ई. (2020). संरचनात्मक अधिगम में आजीवन सीखना। मशीन लर्निंग जर्नल, 109(5), 1035–1072।
12. फेब्रिनांटो, एफ. जी., एवं सहयोगी. (2022). ग्राफ आधारित आजीवन सीखना एक सर्वेक्षण। कंप्यूटर साइंस रिव्यू, 44, 100–120।
13. यूनेस्को. (1972). लर्निंग टू बी (फॉर रिपोर्ट)। पेरिस यूनेस्को।
14. डेलोर्स, जे. (1996). लर्निंग द ट्रेजर विदिन। पेरिस यूनेस्को।
15. डनलैप, जे. सी., एवं ग्रैबिंगर, आर. एस. (2003). उच्च शिक्षा में आजीवन शिक्षार्थी का विकास। एजुकेशनल टेक्नोलॉजी रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 51(4), 5–33।
16. एस्पिन, डी. एन., एवं चौपमैन, जे. डी. (2000). आजीवन सीखने की अवधारणा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन, 20(2), 45–60।
17. कोलार्डिन, जी., एवं ब्योर्नावोल्ड, जे. (2005). ज्ञान समाज में आजीवन सीखना। यूरोपियन जर्नल ऑफ एजुकेशन, 40(3), 251–263।
18. होलफोर्ड, जे. (2007). सामाजिक दृष्टिकोण से वयस्क शिक्षा और सीखना। एडल्ट एजुकेशन क्वार्टरली, 57(2), 135–150।
19. जार्विस, पी. (2004). लाइफलॉन्ग लर्निंग एंड द लर्निंग सोसाइटी। लंदन टलेज।
20. मेरियम, एस. बी., एवं कैफरेला, आर. एस. (1999). लर्निंग इन एडल्टहुड ए कॉम्प्रिहेंसिव गाइड। सैन फ्रांसिस्कोरू जोसी–बास।
21. ब्रुकफील्ड, एस. डी. (1986). अंडरस्टैंडिंग एंड फेसीलिटेटिंग एडल्ट लर्निंग। सैन फ्रांसिस्को जोसी–बास।
22. नोल्स, एम. एस. (1984). एंड्रोगॉजी इन एक्शनरू अप्लाइंग मॉडर्न प्रिंसिपल्स ऑफ एडल्ट लर्निंग। सैन फ्रांसिस्को जोसी–बास।
23. फील्ड, जे. (2006). लाइफलॉन्ग लर्निंग एंड द न्यू एजुकेशनल ऑर्डर। स्टोक–ऑन–ट्रेंट ट्रेंटहम बुक्स।

24. इलरिस, के. (2003). सीखने के तीन आयाम और आधुनिक समाज। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लाइफलॉन्ग एजुकेशन, 22(4), 396–406।
25. कुमार, आर., एवं सिंह, पी. (2024). आजीवन सीखने पर बायब्लियोमेट्रिक विश्लेषणरू एक वैश्विक दृष्टिकोण। जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च, 13(1), 201–215।

Cite this Article

'डॉ. सीमा द्विवेदी', "तेजी से बदलती वैश्विक एवं भारतीय शैक्षिक परिदृश्य में स्थिरता के लिए आजीवन सीखनाः कानपुर जनपद की महिला शिक्षिकाओं के संदर्भ में जागरूकता, व्यवहार, चुनौतियाँ एवं प्रभाव का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:5, May 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."